ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें। O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 38, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 दिसम्बर, 2014 से रविवार 7 दिसम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन सम्पन्न

श्री धर्मपाल आर्य सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

वैदिक विद्वान डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ निर्वाचन

श्री धर्मपाल आर्य जी के नेतृत्त्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और उन्नति प्राप्त करेगी – ब्र. राजसिंह आर्य

मैंने चुनावों जैसी सभा में आर्यजनों में इतना धैर्य और उत्साह पहले कभी नहीं देखा – महाशय धर्मपाल

गत वर्षों का कार्य विवरण एवं आय-व्यय विवरण पर आर्य जनता ने अपार हर्ष जताया

– शेष पृष्ठ 2 एवं 5 पर

साधारण अधिवेशन की अध्यक्षता करते ब्र. राजसिंह आर्य जी, कार्य रिपोर्ट प्रस्तुत करते श्री विनय आर्य जी एवं प्रतिनिधियों से भरा हॉल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में तालकटोरा स्टेडियम में

दिल्ली की समस्त शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक वार्षिकोत्सव-विचारोत्सव समारोह

'कल, आज और कल' सम्पन्न

ईमानदारी, मेहनत, पुरुषार्थ, ईश्वर भक्ति, माता-पिता के आशीर्वाद और सबके प्यार से मिलेगी सफलता – महाशय धर्मपाल

समाज, देश व विश्व के कल्याण के कार्यों में आगे बढ़कर कार्य करके देश का नाम रोशन करेंगे ये बच्चे – डॉ. हर्षवर्धन

शिक्षा के साथ उत्तम संस्कार भी देते हैं आर्य विद्यालय : विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल – डॉ. अशोक चौहान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक विचारोत्सव- 'कल आज और कल', 21 नवम्बर को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में सम्पन्न हुआ।

इस विशाल उत्सव में दिल्ली के आर्य विद्यालयों के लगभग 5000 विद्यार्थियों, अध्यापक-अध्यापिकाओं, विद्यालय के अधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति में विभिन्न विद्यालय के बच्चों ने भारत के गौरवशाली अतीत को मंच पर दर्शाते हुए, उन सब परिस्थितियों का मंचन किया जिनके कारण देश गुलाम हुआ। देश को गुलामी के अंधेरे से बाहर लाने के विभिन्न प्रयास दिखाए गए। प्रेरणादायक प्रस्तुतियों में जहाँ एक ओर विदेशी ताकतों का विरोध दिखाया गया, वहीं आर्यसमाज के संस्थापक 'महर्षि दयानन्द सरस्वती जी' का स्वदेश प्रेम व अन्य सामाजिक बुराइयाँ

– शेष पृष्ठ 4-6-8 पर

दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सर्वश्री धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य, सुरेन्द्र रैली, ब्र. राजसिंह आर्य, राजेन्द्र एवं स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती।

वेद-स्वाध्याय

योगी

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम्।
उरुष्य रायऽएषो यजस्व।।

यजुर्वेद : अध्याय ७ मन्त्र ४

अर्थ—हे योगिन्! तू **(उपयाम गृहीतो असि)** यम-नियमादि के पालन एवं श्रद्धा-भक्ति के कारण उचित पात्र समझ कर स्वीकार किया गया है। **(अन्तर्यच्छ)** जो तेरे आभ्यन्तर प्राण, मन, इन्द्रियाँ हैं उनकी वृत्ति को नियन्त्रित कर **(मघवन् सोमं पाहि)** हे सिद्धि को प्राप्त योगिन्! तुझे जो सोम रस, भक्ति या आनन्द रस प्राप्त हुआ है, उसकी रक्षा कर। उसे किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। **(उरुष्य)** [षो अन्तकर्मणि] चित्त को विक्षिप्त करने वाली जो बहुत सारी वृत्तियाँ हैं उन्हें नष्ट कर जिससे **(रायः)** ऋद्धियों एवं इच्छा सिद्धियों को **(आ यजस्व)** अच्छे प्रकार प्राप्त हो।

योग-साधना के लिये पहले पात्र बनना आवश्यक है जिनके लिये गुरुजन साधक को यम-नियमों का पालन करने को कहते हैं। यम-नियम की पृष्ठभूमि में ही योग का बीज बोया जाता है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पाँच यम हैं जिनके पालन से साधक और समाज में समरसता बनी रहती है। इन्हें साधक की आचार संहिता भी कह सकते हैं। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान पाँच नियम उसके व्यक्तिगत जीवन को पवित्र बनाये रखते हैं। यम और नियम दोनों का ही अभ्यास करना उचित है अन्यथा केवल नियमों के पालन करने वाले का पतन भी हो सकता है क्योंकि यम जाति, देश, काल, समय की सीमा से रहित सार्वभौमव्रत हैं। गुरु कहता है **उपयामगृहीतोऽसि** हे शिष्य! तुमने यम-नियमों का पालन श्रद्धापूर्वक किया है इसलिये मैं तुम्हें अपना शिष्य स्वीकार करता हूँ।

२. अन्तर्यच्छ—हे शिष्य! तुम अपने मन और इन्द्रियों को नियन्त्रित करो। मन के सहयोग से ही इन्द्रियाँ विषयों की ओर आकर्षित होती हैं। जब मन को केन्द्रित किया जायेगा तो इन्द्रियाँ स्वत: ही विषयों से उपरत हो जायेंगी।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥ गीता २.५८॥

जैसे कछुवा अपने अंगों को सब ओर से समेट लेता है वैसे ही साधक जब इन्द्रियों को विषयों से हटा लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। प्राणायाम, जप या मन को स्थान-विशेष में एकाग्र करने से उसकी चञ्चलता दूर हो जाती है।

३. मघवन् पाहि सोमम्—हे योगिन्! समाधि की स्थिति में जो अनुभूति या आनन्द की प्राप्ति हुई है, उसकी रक्षा करना। ध्यान रहे किसी को बतलाने से साधना में व्यवधान आ जाता है। इसी भाँति जो सिद्धि प्राप्त हुई है उसे निरन्तर बनाये रखना और आगे बढ़ना तेरा कर्त्तव्य है। केवल थोड़ी-सी अनुभूति मात्र से रुक नहीं जाना।

४. उरुष्य—साधना के मार्ग में व्याधि, संशय, भ्रान्ति-दर्शन आदि अनेक व्यवधान आते हैं जिनके निवारण के लिये एकतत्त्व अर्थात् ब्रह्म के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिये। इसी भाँति सुखी लोगों से मित्रता, दु:खी लोगों से करुणा अर्थात् उनके दु:खों के निवारण का उपाय, पुण्यात्माओं को देख प्रसन्न होना और पापी लोगों से उपेक्षा—न मित्रता और न ही घृणा करना, इनसे चित्त प्रसन्न हो जाता है।

५. रायः इषः आयजस्व—तू ऋषि-सिद्धियों को भली भाँति प्राप्त कर। जब एक ही विषय में धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास किया जाये तो वह संयम कहलाता है। **तज्जयात् प्रज्ञालोकः** (योग० ३.५) उस संयम के जय से विवेकख्याति रूप प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। **तस्य भूमिषु विनियोगः** (योग० ३.६) इसका उपयोग अगली भूमि अर्थात् चित्त को संयमित कर जो सिद्धियाँ प्राप्त होती है, उनमें लगाना चाहिये।

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्। सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व॥

यजु:० ७.५॥

अर्थ—हे **(मघवन्)** योगिन्! मैं परमेश्वर **(ते अन्तः)** तेरे अन्त:करण में [हृदयाकाश में] **(द्यावापृथिवी दधामि)** सूर्य एवं पृथिवी के विज्ञान को स्थापित करता हूँ। इन **(अवरैः देवैः)** पार्थिव विज्ञान और **(परैः)** द्यु- लोक सम्बन्धी विज्ञान से **(सजूः)** युक्त होकर **(अन्तर्यामे)** अपने मन को वश में रखते हुये **(मादयस्व)** आनन्द को प्राप्त हो।

संयम का अभ्यास हो जाने पर परमेश्वर योगी के हृदय में द्यु-लोक और पृथिवी लोक का ज्ञान देता है। सूर्य में संयम करने से लोक-लोकान्तर का ज्ञान होता है।

भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात् (योग० ३.२६) **चन्द्रे ताराव्यूह ज्ञानम्** (योग ३.२७) चन्द्रमा में संयम करने से तारा समूह का ज्ञान होता है। इसी भाँति ध्रुव तारे में संयम करने तारा मण्डल की गति का ज्ञान होता है।

सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व—हे योगी! तू अपने मन को संयमित कर जो पार्थिव और द्यु-लोक के देव हैं उनका ज्ञान प्राप्त कर, आनन्दित रह। पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश ही ये देव हैं जिनका जय किये जाने पर अणिमादि सिद्धियों का प्रादुर्भाव होता है।

स्थूलस्वरूप सूक्ष्मान्वयार्थवत्त्व संयमाद् भूतजयः (योग० ३.४) पृथिवी आदि पञ्चभूतों के गन्धादि गुण स्थूल कहलाते हैं। पृथिवी का पिण्ड रूप में होना, जल का स्निग्ध, अग्नि का उष्णता, वायु का प्रवहन और आकाश का व्यापकत्व आदि सामान्य से विशेष धर्म हैं। पञ्चतन्मात्रायें इनका सूक्ष्म रूप हैं। प्रकृति के त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्त्व, रज, तम गुण इसके कार्य रूप पञ्चभूतों में देखे जाते हैं इसे अन्वय कहते हैं। ये पाँचों भूत पुरुष के भोगापवर्ग के लिये होने से ये अर्थवत्त्व वाले हैं। योगी इनमें से किसी पर भी संयम कर भूतजयी हो जाता है। जैसे बछड़े के पीछे गाय स्वत: ही चली आती है ऐसे ही ये पञ्चभूत योगी के संकल्प का अनुकरण करने लगते हैं और अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व, ईशित्व, कामावसायित्व रूप अष्ट सिद्धियाँ प्रकट होती हैं।

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यऽइन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्या मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय दवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यऽउदानाय त्वा॥

यजु:० ७.६॥

अर्थ—हे **(सुभव)** शुभैश्वर्य से सम्पन्न योगी! तू **(स्वाङ्कृतः असि)** अपने तप से इस अवस्था तक पहुँचे हो। **(स्वाहा)** तेरी इस योग-साधना से तुझे **(विश्वेभ्यः)** समस्त **(इन्द्रियेभ्यः)** इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान, **(पार्थिवेभ्यः)** पृथिवी लोक सम्बन्धी विज्ञान **(दिव्येभ्यः)** द्यु-लोक सम्बन्धी ज्ञान-विज्ञान **(त्वा)** तुझे **(अष्ट)** मैं प्राप्त कराता हूँ। मैं तुम्हारे **(देवेभ्यो मरीचिपेभ्यः)** मस्तिष्क में दिव्य गुणों की उत्पत्ति और ज्ञान का प्रकाश करता हूँ। **(त्वा)** और तुझे **(उदानाय)** उदान प्राण जो अन्त समय में जीवात्मा को शरीर से निकाल कर ले जाता है उसका विज्ञान देता हूँ।

संयम को प्राप्त योगी को सभी विषयों का ज्ञान हो जाता है। उदान प्राण पर संयम करने से योगी इच्छानुसार शरीर से अपने प्राण को ब्रह्मरन्ध्र द्वारा निकाल मुक्त हो जाता है। यजुर्वेद में केवल इसी मन्त्र का देवता योगी है।

- क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री धर्मपाल आर्य सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार 30 नवम्बर 2014 को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में बड़े सौहार्द एवं शान्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। दिल्ली की आर्य समाजों के 447 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में पूर्ण सफल ही नहीं अपितु सभा के नव निर्वाचित अधिकारियों को सभा के कार्यों को बढ़ाने में पूर्ण सहयोग देने के लिए अश्वस्त भी किया। सभा के द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्यो जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म कला और आयोजित किए गए महासम्मेलनों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

सभा द्वारा शिक्षण संस्थाओं गुरुकुलों, अनाथालयों और आर्य समाजों की समस्याओं को दूर करने के लिए प्रशंसा एवं सन्तोष व्यक्त किया।

अधिवेशन का शुभारम्भ :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन का शुभारम्भ आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में प्रात: 10:30 बजे गायत्री मन्त्र एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के सामूहिक मन्त्रोच्चार के साथ हुआ। अधिवेशन की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए महामन्त्री श्री विनय आर्य ने सभा के वरिष्ठ अधिकारियों को मंच पर प्रतिष्ठा दी। जिनमें महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.), प्रधान- ब्र. राजसिंह आर्य, उप प्रधान सर्वश्री धर्मपाल आर्य, ओप्रकाश आर्य, शिवकुमार मदान, मन्त्री - सर्वश्री शिवशंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुखबीर सिंह, अरुणप्रकाश वर्मा, आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी , श्री राजेन्द्र जी (एम.डी.एच.), श्री सुरेन्द्र रैली(प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद्) श्रीमती बाला चौधरी, श्री हरवंश लाल कोहली, कीर्ति शर्मा आदि उपस्थित रहे।

साधारण अधिवेशन की अध्यक्षता सभा प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य जी ने की। अधिवेशन की कार्यवाही शुरू करते हुए महामन्त्री श्री विनय आर्य ने गत वर्षों में दिवंगत हुए आर्यजनों को श्रद्धाञ्जलि देते हुए दिवंगत महानुभावों की सूची पढ़कर सुनाई। तदुपरान्त सभा के द्वारा किए गए कार्यों एवं प्रयासों की विस्तृत शृंखला को सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत किया और 2010 से 2014 तक का कार्य विवरण प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया दूर-दराज के क्षेत्रों आर्ष वैदिक साहित्य के स्टॉल लगाकर विक्रय किया। इस अवसर पर अनेक ऐसे लोगों से साक्षात्कार हुआ जिन्होंने अपने जीवन में वेदों के दर्शन तक नही किए। असमिया, मलयालम, तमिल, बंगाली, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं नेपाली भाषाओं में सभा ने वैदिक साहित्य उपलब्ध कर विक्रय की व्यवस्था की गई है। जिसके सभा को अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। दिल्ली क्षेत्र में आर्य समाजों के अनेक विवादों का निस्तारण एवं सामजस्य की स्थिति बरकरार कराई गई। कुछ ऐसे आर्य समाजों की शिकायत एवं वाद न्यायालय में किया गया जो फर्जी तरीके से चलाए जा रहे थे।

- शेष पृष्ठ 4 पर

अब तो जाग जाओ: रामपाल काण्ड ने फिर चेताया है?

– प्रकाश आर्य

18वीं सदी में महर्षि दयानन्द ने सोते हुए समाज को निद्रा से जगाने के लिए अन्धविश्वास मिटाने के लिए लगभग 150 वर्ष पूर्व शंख नाद किया था। फिर धर्म और ईश्वर के नाम पर फैली अज्ञानता और उसमें पनपते पाखण्ड से समाज को बचाने के लिए प्रयास प्रारम्भ किया।

ईश्वर के नाम पर मानव पूजा धर्म की आड़ में बढ़ते अधर्म अत्याचार, पाखण्ड, और अनैतिक कार्यों से उलझती समाजिक व्यवस्था को सही मार्ग दिखाने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना 1975 में हुई। आर्य समाज की मान्यता का आधार कोई मानवीय विचारधारा नहीं महर्षि दयानन्द के ही विचार नहीं है उसका आधार परमात्मा का ज्ञान वेद हैं। आज धर्म के नाम पर गुरूडम फैल रहा है चेला,चेली, भक्त बनाने की नाम देने की परम्परा तेजी कर्म फल के संबंध में समाज अपना स्वयं का विवेक काम में नहीं लाता, अन्ध श्रद्धा जो प्रचार, दिखावे और बड़ी भीड़ के कारण उत्पन्न होती है, उसी के प्रभाव में अनजानी व अनचाही जगह से जुड़ जाता है। ऐसे धूर्तो के शब्दों और मान्यता के जाल में उलझा व्यक्ति गुमराह बन उसे ही सब कुछ मानने लगता है। ईश्वर के स्थान पर ऐसे सन्त, स्वामी बाबा गुरु पूजने लगते हैं। इस प्रकार धर्म और ईश्वर के सत्य मार्ग से भटक कर करोड़ों करोड़ों व्यक्ति अधर्म और व्यक्ति पूजा के पथ पर चल रहे है।

इस प्रकार की भीड का एक कारण और है आज व्यक्ति सत्य व ईमानदारी के स्थान पर झूठ और फरेब से अपना विकास करना चाहता है। समाज में तेजी से बढ़ती

बिना किसी योग्यता, धर्म ग्रन्थ की दो–चार पुस्तकें पढ़कर, थोडी बोलने की कला सीखकर आज हजारों व्यक्ति शास्त्री, आचार्य, स्वामी, सन्त, के नाम से पुज रहे हैं। कोई उनसे पूछने वाला नहीं है कि आप स्वामी, सन्त, आचार्य कैसे और कब बन गए? आपके जीवन में यह ज्ञान प्राप्त कैसे कहां से हुआ? यह नहीं देखते कि वह योगी है या भोगी? रामपाल नाम के व्यक्ति जिस पर प्रकाशित समाचार पत्रों व टी.वी रेडियो न्यूज के द्वारा देशद्रोही, हत्यारा न्यायालय की अवमानना करने वाला बताया। अपने प्रभाव से हजारों लोगों के किसी प्रकार का सन्देश देकर ईमानदार उन्हें बन्धक बनाने वाला, भोग विलास में डूबा हुआ। अपनी सन्त के नाम से पहचान बनाने वाले ने अपने को भगवान तुल्य

इस कारण रामपाल व कई साथियों पर मुकदमा दर्ज हुआ। आश्रम सील कर बन्द कर दिया। किन्तु पुनः कुछ साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने आश्रम को खोलने की अनुमति दी। किन्तु रामपाल के अत्याचारों व पाखण्ड से परेशान जनता ने इसका विरोध कर पुनः आश्रम प्रारंभ करने का पुरजोर विरोध किया। संघर्ष हुआ प्रशासनिक कार्यवाही हुई और फिर इसमें 3 व्यक्तियों की जो आश्रम को खोलने का विरोध कर रहे थे, उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार सन्त के नाम पर हिंसा का ताण्डव, अत्याधिक गतिविधियों का हिंसा से प्रमाण मिलने के बाद भी सन्त के नाम रामपाल अपनी दुकानदारी चलाते रहे और

> ***''स एष पूर्वेषामपिगुरूः कालेनान वच्छेदात्।'' अर्थात् सबका सब गुरुओं का गुरु वह एक परमात्मा है जो हमसे कभी अलग नहीं होता। वही सबको बुद्धि देने वाला सबका स्वामी है वही हमारा राजा, आचार्य, गुरु व स्वामी है।***
>
> ***फिर हम इन सांसारिक गुरुओं को क्यों इतना महत्व देकर भगवान के समकक्ष समझ लेते हैं? यही सामाजिक बुराई, पाखण्ड और शोषण का कारण है। किसी व्यक्ति उसकी योग्यता के अनुसार मान सम्मान देना चाहिए किन्तु अन्ध भक्त बनकर सत्य को नहीं नकारना चाहिए। जब तक एक ईश्वर, एक धर्म (जो सिर्फ सनातन ही है और कर्म फल पर विश्वास नहीं होगा तब साधु, सन्त, योगी के रूप में कई बहुरूपिये समाज में पैदा होकर समाज का शोषण करते रहेंगे।***
>
> ***पूजा, पाठ अंगूठी, तन्त्र, मन्त्र, ताबीज, गुरूनाम के आधार पर समाज को कर्म व्यवस्था से दूर कर अकर्मण्य वादी भाग्यवादी बनाते रहेंगे। कर्म फलों से जिसमें कितने भी बड़े पाप हों, उनसे मुक्त कराने का झूठा प्रलोभन देकर समाज को गुमराह करते रहेंगे। परमात्मा की कर्म फल व्यवस्था के विरुद्ध अपनी चालाकी से दुकान चलाते रहेंगे। सही अज्ञानता समाज में पापाचार, अत्याचार को फैला रही है। इसलिए आज आर्य समाज के विचारों की आवश्यकता है जिससे इन अन्धविश्वासों, मानवीय पूजा और बिन कर्म किए कुछ साधनों से सबकुछ प्राप्त करने की विचारधारा को गलत बताया है। सत्य कर्म और पुरूषार्थ से ही पाप वृत्ति का अन्त होता है।***

से फैल रही है। समाज की अव्यवस्थित दशा के कारण दुःखी, निराश, परेशान, निरूत्साही, और अकर्मण्य लोगों को धर्म के नाम पर चमत्कार हाथ की सफाई, वाक्य चातुर्यता और नकली भक्तों की एजेन्सी के द्वारा प्रभावित किया जा रहा है।

यह सब बहुत तेजी हो रहा है, समाज की आध्यात्मिक भावनाओं का दुरुपयोग और शोषण हजारों व्यक्ति सन्त, महात्मा, कथावाचक, योगी, अवतार गुरुजी बनकर कर रहे है। बाहर की चमक धमक, भीड़, बड़े- बड़े आश्रम, अनेक चेलो चेलियों को निरन्तर साथ रहने वाली भीड़, भक्तों को आकर्षित करने के मुख्य साधन बन गए है।

ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था के विपरीत ऐसे लोग अपने भक्तों को उनके दुःखों से, अभावों से और तो और पाप कर्मो से भी मुक्ति दिलाने का आश्वासन देकर उन्हें आकर्षित करते हैं। मरता, क्या नहीं करता, ऐसे अनेक व्यक्ति तथाकथित सन्तों के शिकार हो जाते हैं। जबकि परमात्मा की कर्म व्यवस्था जिसमें मनुष्य को प्रत्येक कर्म का फल भोगना ही पड़ता है, कर्म फल से कोई बच नहीं सकता। कर्म फल का अन्त उसके भोग पूर्ण होने पर ही संभव है किन्तु यह तथाकथित सन्त बाबा इन सिद्धान्तों की उपेक्षा कर उन सभी पापियों को भी पाप से अधर्म कार्यों के फलों से मुक्त करके प्रसन्न कर देते हैं। बदले में दान के रूप में मोटी रकम, स्थायी रूप से उनके साथ आश्रम या निर्मित अड्डों पर रहकर उनकी सेवा भक्ति गुणगान, झूठी प्रशंसा आदि–आदि करना पड़ता है।

यह दुर्भाग्य है धर्म और ईश्वर तथा शोषण व भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति इसी का स्पष्ट परिणाम है। आदमी धर्म का पालन किए बिना अच्छा फल चाहता है। पाप कर्म करते हुए भी धर्म का फल चाहता है। धार्मिक बनना नहीं चाहता, दिखावा चाहता है। यह सब असंभव है। सनातन व्यवस्था ईश्वरीय सन्देश के विपरीत है किन्तु ऐसे बाबा, स्वामी, सन्त, गुरू प्रायः जिनका स्वयं का चरित्र भोग विलास राग द्वेष से पूर्ण है वे इन सबसे समाज को मुक्ति का रास्ता दिखा देते है। समाज को और क्या चाहिए। पाप करते हुए भी धर्म का फल, धार्मिक न होते हुए भी धार्मिकता का प्रमाण पत्र जब मिल रहा है तो इससे सस्ता सरल बिना प्रयास किए सर्वोत्तम मार्ग और क्या हो सकता है ?

भेड़ चाल की तरह चलता समाज बिना सोचे समझे बिना परिश्रम और धर्म का पालन किए ईश्वर को और धर्म के फल को प्राप्त करना चाहता है। भीड़ को देख उसके गुण दोषों को अनदेखा कर आंख मूंद कर भेड़ों की तरह वह ऐसे धूर्त पाखण्डियों समाज के चालाक नकली स्वामी बाबा सन्त, साधुओं, योगियों, की शरण में जाकर अपना लाभ चाहते है। भगवा या सफेद वस्त्र, टीका, दाड़ी, से रचित स्वांग से भोले–भाले लोगों का शोषण करते हैं। भूल जाते हैं सीता का अपहरण करने वाला बाहर से स्वांग से साधू का रूप लेकर ही आया था।

सीताजी उनके बाहरी स्वरूप के कारण ही तो अपहरण हुई थीं। वही सबकुछ अब भी हो रहा है फर्क इतना है पहले एक साधु रावण ने अपहरण किया था और अब अनेक रावण साधू–सन्त वेश में समाज की सीता का अपहरण कर रहे हैं।

सिद्ध कर दिया। अनपढ़, अज्ञानी और स्वार्थी प्रायः ऐसे लोगों के सम्पर्क में आकर उलझ जाते हैं फिर इनके साथ कुछ इनके ही सहयोगी जनता को इनसे जोड़ने गुरुजी की महानता बताकर झूठी चमत्कारी कहानी सुनाकर जाल में फंसाते हैं।

2008 में रामपाल के विरुद्ध आर्य समाज के द्वारा शासन को जानकारी दी गई थी कि रामपाल का जो आश्रम है, वह गलत गतिविधियों का केन्द्र है वहां पाखण्ड और अनाचार होता है। किन्तु झूठी शान शौकत नाम के प्रभाव के कारण शासन की समझ में नहीं आयी। किन्तु जब जन सैलाब गलत आपत्तिजनक गतिविधियों को रोकने के लिए उठ खड़ा हुआ और आश्रम के भीतर से गोलियां चली, जिसमें एक आर्यवीर शहीद भी हुआ। कई घायल हुए। फिर प्रशासकीय कार्यवाही की गई समाचार पत्रों के अनुसार रामपाल के आश्रय करौंथा आश्रम से काफी रुपया, जेवरात और आपत्तिजनक तथा अश्लील वस्तुएं जब्त कीं।

अन्ध विश्वासी उनको फिर भी महान मानते रहे। अपने भक्तों की बढ़ती संख्या के मद में अपने को सर्वशक्तिमान मानने वाले रामपाल ने न्यायपालिका की भी अवहेलना कर उसके आदेश को भी नकार दिया।

दादागिरी या गुण्डागिरी को अपना शस्त्र बनाकर आश्रम के नाम पर गुनाहगारों का अड्डा बना दिया। चालाकी और धूर्तता का सहारा लेते हुए भक्ति भजन सत्संग के नाम पर अपने हजारों भक्तों को एक षड्यन्त्र के अन्तर्गत इकट्ठा कर लिया फिर उन्हें जबरदस्ती रोका और अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए मासूम बच्चों को भोली–भाली धर्म के नाम पर बुलाई महिलाओं का अपनी रक्षा के लिए आगे आश्रम के प्रवेश द्वारों पर बैठा दिया। प्रशासन व पुलिस द्वारा कई बार अपने आपको सरेण्डर करने की सूचना रामपाल को दी गई किन्तु अवहेलना की गई। प्रशासनिक कार्यवाही करने पर आश्रम में पहले से जमा अपने अंग रक्षकों के द्वारा

– शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली की समस्त शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक वार्षिकोत्सव.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

जैसे पाखण्ड, अंधविश्वास जातिवाद, छुआछूत, स्त्रियों की समाज में स्थिति के प्रति चिन्तन व मनन का बच्चों ने विभिन्न ऐतिहासिक नाटिकाओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से मंचन किया। समाज में आज की वर्तमान स्थिति और आने वाले कल के लिए संकल्प और स्वप्न को बच्चों ने मंच पर प्रदर्शित किया।

आर्यसमाज के विद्यालयों में ही पोषित होता है देश का असल भविष्य – प्रकाश झा

इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण प्रातः 9:30 से दोपहर 1:30 बजे तक संस्कार चैनल पर प्रसारित हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ राष्ट्र समृद्धि यज्ञ से हुआ। श्री मदन मोहन सलूजा जी द्वारा की गई यज्ञ की सुन्दर व्यवस्था में सभी के प्रिय महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम. डी.एच.) ने स्वयं उपस्थित होकर अन्य अधिकारियों व बच्चों के साथ परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की व बच्चों को आशीर्वाद प्रदान किया।

महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन, एम.डी.एच.) के सानिध्य में, डॉ० अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक, अध्यक्ष, एमिटी शिक्षण संस्थान) व श्री आनन्द चौहान जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में श्री प्रभात

– शेष पृष्ठ 6 एवं 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ....

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान निर्वाचित होने पर श्री धर्मपाल आर्य जी को अपना आशीर्वाद प्रदान करते महाशय धर्मपाल जी।

सभा के त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन में निर्वाचन अधिकारी के रूप में उपस्थित वैदिक विद्वान् डॉ. सुरेन्द्र कुमार एवं मंचस्थ महाशय धर्मपाल जी एवं श्री राजेन्द्र जी एवं अन्य महानुभाव। श्री धर्मपाल आर्य जी का प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत किए जाने पर हाथ उठाकर अनुमोदन करते प्रतिनिधि। नवनिर्वाचित प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के साथ ब्र. राजसिंह आर्य जी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से पधारे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए।

सभा की अनगिनत उपलब्धियों की संक्षिप्त चर्चा करते हुए महामंत्री जी ने अनेक नए कार्यक्रमों की योजनाओं एवं भविष्य में किए जाने वाले कार्यो के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जिसे उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने एक स्वर में प्रशंसा की और स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने बताया कि वैसे तो आर्य केन्द्रिय सभा, महर्षि निर्वाण दिवस, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस बहुत ही प्रभावशाली एवं विशाल स्तर पर मनाती है। सभा ने पं. लेखराम तृतीया, हैदराबाद सत्याग्रह, दण्डी स्वामी विरजानन्द दिवस, होली मंगल मिलन एवं महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव आदि बड़े स्तर पर मनाएँ जाने की बात भी कही।

महाशय धर्मपाल जी के योगदान की चर्चा – महामंत्री जी ने महाशय धर्मपाल जी की प्रशंसा करते हुए उनकी आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के प्रति अतिशय लगाव, निष्ठा, समर्पण, सहयोग, श्रद्धा एवं भक्ति को अद्वितीय बताया।

आर्यसमाज के उत्सवों को टी.वी. चैनलों पर सीधे प्रसारण (समाचार पत्रों में विज्ञापन) की व्यवस्था महाशय जी के सहयोग से सम्भव हो सकी उन्हीं के आशीर्वाद, प्रेरणा, सहयोग एवं मार्गदर्शन से सभा अपने वृहद् सम्मेलनों को सफल बना पाई। गुरुकुल काँगड़ी, हरिद्वार, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी की जिम्मेदारियाँ जिन परिस्थितियों में सभा को प्राप्त हुई थी। ऐसी परिस्थितियों में इसकी पतवार महाशय धर्मपाल जी ने न संभाली होती तो क्या परिस्थितियाँ होती ? उनका अनुमान लगाना सहज नही है। उन सारी परिस्थियों को शब्दों में बता पाना बड़ा कठिन है किन्तु यह जरूर कहा जा सकता है कि – डूबते हुए जहाज को अपना बल प्रयोग कर के वापिस बाहर निकाल कर के लाने का जो सामर्थ्य महाशय जी में है वो अन्य में मिलना असम्भव है।

श्री धर्मपाल आर्य जी के योगदान की चर्चा करते हुए महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बताया कि – आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के द्वारा गत् चार वर्षो में सभा के उत्थान के लिए हर प्रकार का सहयोग खुले हाथों से किया। जिसमें आर्य सन्देश का व्यय, कर्मचारियों के वेतन, वकील व्यय, विज्ञापन व्यय, कार्यक्रमों में सहयोग एवं वाहन व्यय आदि मदों में लगभग तीन लाख रुपये से अधिक का मासिक सहयोग निरन्तर प्राप्त हो रहा है, अगर ये सहयोग सभा के साथ न जुड़ पाता तो सभा के कार्यो में वृद्धि हो पाना लगभग असम्भव था। इसलिए श्री धर्मपाल आर्य जी के लिए सभा अत्यन्त आभारी है। हर वर्ष महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव और स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर लगभग 15 लाख रुपये के विज्ञापन आपकी ओर से राष्ट्रीय समाचार पत्रों में निरन्तर प्रकाशित किए जाते रहे हैं।

सभा कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा जी के विदेश प्रवास पर होने के कारण आय-व्यय की प्रस्तुति महामन्त्री श्री विनय आर्य ने की। उन्होंने वर्ष 2003 से 2014 तक तुलनात्मक रिपोर्ट भी दी। उपस्थित सदस्यों ने इस पर हर्ष व्यक्त करते हुए सभा अधिकारियों को बधाई दी।

सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी का उद्बोधन – सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि– सभा के अब तक किए गए कार्यो में आप सब आर्य जनों का सहयोग निरन्तर रहा। जो सभा के लिए बहुत बड़ा सम्बल है। आप सभी आर्य जन समाज के माध्यम से समाज सुधार, धर्म रक्षा, धर्म प्रचार, संस्कृति रक्षा, योग एवं शिक्षा व अनेक अन्य जो भी कार्य कर रहे हैं वे अच्छे है। लेकिन अभी इस दिशा में और भी करने की आवश्यकता है। उन्होंने समानान्तर आर्य समाजों के गठन पर चिन्ता व्यक्त की और सहयोग के लिए सभी आर्य प्रतिनिधियों पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी वेद प्रचार मण्डल दिल्ली, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश, सभी गुरूकुलों व आर्य समाज हनुमान रोड का धन्यवाद किया।

महाशय धर्मपाल जी का आशीर्वाद–

अधिवेशन में संरक्षक के रूप में आमन्त्रित उद्योगपति आर्य जगत् के भामाशाह 92 वर्ष के युवा महाशय श्री धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में आशीर्वाद स्वरूप सभा के सभी पदधिकारियों के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रकट की एवं ईमानदारी, ईश्वर भक्ति, परोपकार की भावना से समाज सेवा करने की प्रेरणा दी। अपनी वर्तमान स्थिति के विषय में चर्चा करते हुए कहा कि– मैं समाज का सेवक हूँ मेरे पास जो कुछ है वह समाज का है और यह आर्य समाज मेरी माँ के समान है। अतः मैं जीवन पर्यन्त इसकी सेवा करता रहूँगा।

आर्य समाज और महर्षि दयानन्द जी का मेरे ऊपर बड़ा उपकार है कि आज उनके बताए रास्ते पर चलकर मैं आर्य समाज की सेवा करने में सक्षम हूँ। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि ये पूरी टीम स्वस्थ एवं सानन्द रहे, मेरा आशीर्वाद सदा सभा के साथ बना रहेगा।

चुनाव प्रक्रिया – सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से चुनाव अधिकारी के रूप में वैदिक विद्वान डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी को आमन्त्रित किया गया था। सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी ने अधिवेशन की कार्यवाही समाप्त करते हुए गत् अन्तरंग सभा एवं समस्त समितियों को भंग करने की घोषणा की और सभा के आगामी निर्वाचन के लिए डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को अध्यक्ष पद सौंपा।

निर्वाचन अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने सर्वप्रथम सदस्यों से सौहार्द बनाए रखने की अपील करते हुए सभा के संविधान की विवेचना की तथा प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत करने का निवेदन किया।

ब्र. राजसिंह आर्य एवं समस्त आर्य प्रतिनिधियों के सहयोग, समर्थन एवं सर्वसम्मति से निर्वाचन अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने श्री धर्मपाल आर्य को 'प्रधान' घोषित किया। प्रतिनिधियों ने सभा की कार्यकारिणी, अन्तरंग सभा एवं अन्य समितियो के सदस्यों चुनने का अधिकार भी प्रधान जी को सौंपने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

चुनाव अधिकारी का उद्बोधन

चुनाव प्रक्रिया के अन्त में चुनाव अधिकारी मनुस्मृति के प्रसिद्ध भाष्यकार डॉ० सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि– अधिवेशन में सभी आर्य प्रतिनिधि एक युग पुरुष की संस्था से सम्बद्ध रखते है। यह संगठन कोई राजनीतिक संगठन नही है। इसलिए सभी माप दण्डों को ध्यान में रखते हुए समाज सुधार के कार्यो को गति दें और महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाए। उन्होंने शान्ति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में पदाधिकारियों को चुनने पर आर्य प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया।

अन्त में नव निर्वाचित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने उपस्थित सभी प्रतिनिधियों के प्रति आभार प्रकट किया। शान्ति पाठ एवं जयघोष के साथ निर्वाचन कार्यवाही सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली की ओर से समस्त आगन्तुकों के लिए प्रीति-भोज की व्यवस्था हेतु आर्य समाज के समस्त अधिकारियों का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

पृष्ठ 3 का शेष

अब तो जाग जाओ: राम....

पुलिस पर हमला करवा दिया। पेट्रोल बम, गोली, पत्थर, लोहे के टुकड़ों से रामपाल की सेना ने हमला किया।

गिरफ्तारी से बचने के लिए बीमारी का नाटक और आश्रम में न होकर कहीं और उपचार करवाने गए हैं, की झूठी खबर फैलाने का प्रयास किया गया। यह दृश्य टीवी चैनलों पर करोड़ों व्यक्तियों ने देखा। समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया। किसी सत्य कहने वालों का विरोध करने वाले ऐसे कई दुर्जन होते, जिन्हें सत्य से अपने स्वार्थ का नुकसान होता है या संभावना होती है।

रामपाल के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभियान छेड़ा था। क्योंकि आर्य समाज का मुख्य ध्येय समाज से अज्ञान को दूर कर सत्य का प्रतिपादन करना है।

सार्वदेशिक सभा के तपस्वी प्रधान आचार्य बलदेवजी के प्रयासों से इस नामधारी सन्त की असलियत समाज के सामने उजागर की थी। पर खेद है समाज आर्य समाज की बात को गंभीरता से नहीं लेता अन्यथा इतना बड़ा जाल फैलाने में रामपाल कभी फलीभूत नहीं होता।

महर्षि दयानन्द जिनका सम्पूर्ण जीवन, जीवन का एक-एक क्षण परमार्थ व समाज के कल्याण के लिए था, उन्हें ही समाज नहीं समझ पाया। 16 बार प्राणों को दांव पर लगाने वाले महान समाज सुधारक की बातों को समाज सुन लेता तो देश में धर्म, कर्म, ईश्वर के नाम पर इतना पाखण्ड, अन्धविश्वास और कटुता नहीं फैलती।

यही कारण था रामपाल उस महर्षि दयानन्द के अद्भुत और अद्वितीय ज्ञानवर्द्धक ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पर ही भद्दी टिप्पणी करने लगा था।

जिस महान त्यागी चिन्तक, समाज व राष्ट्र हितैषी संन्यासी को संसार के हजारों महापुरुषों ने श्रेष्ठ बताया। जिसे अद्वितीय विद्वान व योगी माना उस स्वामी दयानन्द पर निम्न स्तर की विकृत बुद्धि से ही कीचड़ उछालना प्रारंभ कर दिया था। कई बार उसके इस कथन को चुनौती देते हुए चर्चा करते क्योंकि शास्त्रार्थ की योग्यता तो थी ही नहीं, बुलाया किन्तु एक बार भी इस हेतु तैयार नहीं हुआ।

खैर, रावण, कंस, दुर्योधन और देश पर राज्य करने वाले आततायी फिरंगियों का भी अन्त हुआ तो, इस नामधारी सन्त के अत्याचार, फरेब, धोखे से भरे कारनामों का अन्त क्यों नहीं होता ? सत्य परेशान हो सकता है किन्तु पराजित नहीं होता। परमात्मा के यहां का न्याय भी जो सदा सत्य के साथ रहता है यहां भी ऐसा हुआ। आर्यों के द्वारा जन कल्याण के लिए अधर्म व पाखण्ड के लिए प्रारंभ किए गए कार्य को सफलता मिली और एक पाखण्ड का अन्त हुआ।

किन्तु सवाल एक रामपाल या तथाकथित 2-4 सन्तों का नहीं है। हजारों ऐसे व्यक्ति चमत्कार वस्त्र, वाणी, मठ, मन्दिर, मजार, झाड़-फूंक, ताबीज के नाम पर चेला-चेली बनाकर बड़ी भीड़ प्रसाद, भण्डारे, आशीर्वाद के नाम पर धार्मिक भावनाओं का खुलकर समाज का शोषण कर रहे हैं और सनातन धर्म की मान्यता को नकारकर चल रहे हैं, गुरु बनकर करोड़ों की सम्पत्ति एकत्रित कर रहे हैं। सनातन धर्म के आधार वेद में कहा गया-

''स एष पूर्वेषामपिगुरू: कालेनान वच्छेदात्।'' अर्थात् सबका सब गुरुओं का गुरु वह एक परमात्मा है जो हमसे कभी अलग नहीं होता। वही सबको बुद्धि देने वाला सबका स्वामी है वही हमारा राजा, आचार्य, गुरु व स्वामी है।

फिर हम इन सांसारिक गुरुओं को क्यों इतना महत्व देकर भगवान के समकक्ष समझ लेते हैं? यही सामाजिक बुराई, पाखण्ड और शोषण का कारण है। किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार मान सम्मान देना चाहिए किन्तु अन्ध भक्त बनकर सत्य को नहीं नकारना चाहिए। जब तक एक ईश्वर, एक धर्म (जो सिर्फ सनातन ही है) और कर्म फल पर विश्वास नहीं होगा तब साधु, सन्त, योगी के रूप में कई बहुरूपिये समाज में पैदा होकर समाज का शोषण करते रहेगें।

पूजा, पाठ अंगूठी, तन्त्र, मन्त्र, ताबीज, गुरूनाम के आधार पर समाज को कर्म व्यवस्था से दूर कर अकर्मण्य वादी भाग्यवादी बनाते रहेगें। कर्म फलों से जिसमें कितने भी बड़े पाप हों, उनसे मुक्त कराने का झूठा प्रलोभन देकर समाज को गुमराह करते रहेगें। परमात्मा की कर्म फल व्यवस्था के विरुद्ध अपनी चालाकी से दुकान चलाते रहेगें। सही अज्ञानता समाज में पापाचार, अत्याचार को फैला रही है। इसलिए आज आर्य समाज के विचारों की आवश्यकता है जिससे इन अन्धविश्वासों, मानवीय पूजा और बिन कर्म किए कुछ साधनों से सबकुछ प्राप्त करने की विचारधारा को गलत बताया है। सत्य कर्म और पुरूषार्थ से ही पाप वृत्ति का अन्त होता है।

किन्तु यह सब इसलिए बढ़ता जा रहा है, क्योंकि अज्ञान, पाखण्ड और अन्धविश्वास को नष्ट करने वाली संस्था के सदस्य आर्यजन उतने सक्रिय नहीं है जितना होना चाहिए। गुरुवर दयानन्द के द्वारा जो राह पाखण्ड खण्डिनी की दिखाई थी उस पर दृढ़ता से चलकर समाज को बचाना होगा। तब कहीं धर्म के नाम पर चल रहे व्यापारिक षड़यन्त्रों से समाज को मुक्ति मिलेगी।

- मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, न.दि.
इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

खेद व्यक्त : पाठकों की सूचनार्थ है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक दिनांक 24 से 30 नवम्बर, 2014 सभा के त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन की तैयारियों के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है।
- सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

झा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भा.ज.पा.) मुख्य अतिथि के रूप में, डॉ० हर्षवर्धन जी (सांसद, लोकसभा), श्री श्यामलाल गर्ग जी, (कोषाध्यक्ष, भा.ज.पा. दिल्ली) श्री प्रकाश आर्य, (मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), विशिष्ट अतिथि के रूप में, स्वामी प्रवमानन्द जी व अन्य संन्यासी वृद्ध, उपस्थित हुए और सभी का मार्गदर्शन व बच्चों को आशीर्वाद दिया।

सभी अतिथियों का स्वागत किया गया व स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। दीप प्रज्जवलन के साथ मंच पर कार्यक्रम- 'कल आज और कल' की शुरुआत गुरुकुल- रानी बाग, सैनिक विहार व संस्कृत कुलम् के विद्यार्थियों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों से हुई।

आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने परिषद् के आर्य विद्यालयों में विभिन्न गतिविधियाँ जैसे- बच्चों को नैतिक शिक्षा देना, अध्यापिकाओं व बच्चों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करवाना, अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताएँ आयोजित करना, नैतिक शिक्षा की केन्द्रीय स्तर पर परीक्षा आयोजित करवाना आदि की जानकारी देने हेतु कार्यक्रम का आगाज किया। विभिन्न आर्य विद्यालयों- एम.डी. एच. इन्टरनेशनल, जनकपुरी, रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, कनॉट प्लेस, दयानन्द मॉडल स्कूल मॉडल टाऊन, वैदिक शिक्षा केन्द्र, प्रीत विहार, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजिनी नगर, दयानंद आदर्श विद्यालय तिलक नगर, आर्य शिशु शाला, ग्रेटर कैलाश, महर्षि दयानंद आर्य पब्लिक स्कूल, शादीपुर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, न्यू मोती नगर, गुरुकुल रानीबाग गुरुकुल सैनिक विहार के लगभग 700 विद्यार्थियों ने अतीत की ऐतिहासिक सच्ची घटनाओं एवं संगीतमय प्रस्तुतियाँ के माध्यम से वर्तमान स्थिति की समस्याएँ और भविष्य में भारत को फिर से विश्वगुरु बनाने का स्वप्न दर्शाते हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बाल प्रस्तुतियों को देखकर भावुक महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि-इतिहास एवं संगीत के सम्मिश्रण वाला कार्यक्रम पहली बार देखा। इन प्रस्तुतियों को देखकर बेहद खुश हूँ। सभी को आशीर्वाद देता हूँ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रभात झा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भा.ज.पा.) ने अपने सम्बोधन में कहा कि- आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी की दूरदृष्टि थी कि समाज को कैसे बुराइयों से दूर रखा जा सकता है। हमें उनकी शिक्षाओं का अनुशरण करना चाहिए। आज के भव्य आयोजन में सभी प्रस्तुतियाँ प्रेरणादायक है। निश्चित ही आर्य विद्यालयों में देश का भविष्य पोषित हो रहा है।

डॉ० हर्षवर्धन (मंत्री- भारत सरकार) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने सदैव समाज को सही राह दिखाई है। आर्यों अर्थात श्रेष्ठ व्यक्तियों का इतिहास समाज को प्रेरणा देने का रहा है। आज फिर आवश्यकता है अपने गौरवशाली इतिहास की भाँति ही भविष्य को भी गौरवशाली बनाने में समाज के सभी लोग आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चले। आर्य शिक्षण संस्थाएँ बच्चों को उत्तम संस्कार देकर बेहतर देशभक्त इंसान बेहतर नागरिक, और सबसे महत्त्वपूर्ण मानव कल्याण के लिए, देश व विश्व के कल्याण के लिए समर्पित फौज तैयार कर रहे है। मैं सभी को शुभकामनाएँ व बच्चों को आशीर्वाद देता हूँ।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद लोकसभा) ने कहा कि- अतीत में भी भारत अपनी संस्कृति, सभ्यता, वैभव, सत्यता, सच्चाई व ईमानदारी के कारण ही विश्व का सिरमौर रहा है। पुन: आर्ष शिक्षा पद्धति और वैदिक शिक्षा की आवश्यकता आज समाज को है। ताकि इस देश को पुन: पुराने गौरव की ओर ले जाया जा सके।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि- आर्य विद्यालयों में बच्चों में उत्तम संस्कार दिए जा रहे है। यहां विद्यार्थी भौतिक उन्नति के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान के माध्यम से जीवन जीने की कला भी सीखता है। अक्सर विद्यालयों के कार्यक्रमों में पाश्चात्य सभ्यता और वर्तमान समय की गतिविधियाँ ही कार्यक्रम का हिस्सा होती है। लेकिन आज के इस कार्यक्रम में अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य से सम्बन्धित प्रस्तुतियां यह प्रदर्शित करती है कि आर्य विद्यार्थी ही भारत के स्वाभिमान की रक्षा कर पाएगें। हमें अपने अतीत से प्रेरणा लेकर, वर्तमान में उसे अपनाकर भविष्य का चिंतन करना चाहिए। कार्यक्रम आयोजि करने के लिए बधाई देता हूं। ऐसे कार्यक्रम निरन्तर होने चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा कि- इस कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों ने अपनी शिक्षा और संस्कारों को दर्शाया है । मैं सभी विद्यालयों के अधिकारियों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद देता हूं और उम्मीद करता हूं कि दयानन्द जी की बगिया के ये फूल उत्तम संस्कार पाकर देश का नाम रोशन करेगें।

श्री धर्मपाल आर्य (वरिष्ठ उप-प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि- मैं इस प्रेरणादायक उत्सव के लिए सभी आर्य विद्यालयों के अधिकारियों का धन्यवाद करता हूं और बच्चों को आशीर्वाद देता हूं।

श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली ने कहा कि- आर्य विद्यालयों में बच्चों को उत्तम संस्कारों द्वारा पोषित किया जा रहा है। भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक के रूप में ये ही बच्चें हमारा भविष्य है । हम गर्व से कह सकते है कि हमारा भविष्य उज्ज्वल है।

इस अभूतपूर्व ऐतिहासिक कार्यक्रम का संचालन सभा महामन्त्री श्री विनय

- शेष पृष्ठ 8 पर

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का बलिदान दिवस सम्पन्न

बालाजी एज्युकेशन ईस्टीट्यूट रंगबाड़ी में लाला लाजपत के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० अशोक आर्य अमरोहा (उ०प्र०) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि लाला लाजपत राय एक महान राष्ट्रभक्त, अग्रनायक, लोकनायक तथा महान व्यक्तित्व के धनी थे। लाला जी को देशभक्ति की प्रेरणा महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज से मिली। स्वाधीनता संग्राम में उनका बलिदान बेकार नहीं गया जिसके फलस्वरूप शहीद भगत सिंह जैसे बलिदानियों की एक टीम तैयार हुई। लाला जी कहते थे कि आर्य समाज मेरी माता व महर्षि दयानन्द मेरे धर्म पिता हैं।

मुख्य वक्ता श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने लाला जी के बलिदानी जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति कृतज्ञता के भाव रखने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढ़ा जी ने कहा कि- आज के दिन हमें राष्ट्र भक्ति का संकल्प लेकर लाला जी के कार्यों को पूरा करना होगा। अकाल के समय उन्होंने फिरोजपुर में अनाथालय स्थापित किया और अपनी सारी कमाई दान में देदी।

अन्त में प्राचार्या श्रीमती डॉ० सावित्री सिंगवाल ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

- अरविन्द पाण्डेय, सचिव

आर्यसमाज डोरीवालान में चतुर्वेद शतकम् सम्पन्न

यशस्वी धर्माचार्य श्री विश्वमित्र मेधावी जी के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद शतकम् यज्ञ सम्पन्न हुआ उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक अवमूल्यों की विस्तृत व्याख्याएँ की और कहा कि ईश्वर एक है इसलिए हमें उसी सर्वव्यापक की उपासना करनी चाहिए किसी अन्य की नहीं। इस अवसर पर समाज के पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश नरूला जी ने अपना 94वाँ जन्म दिवस उत्साह पूर्वक मनाया। कार्यक्रम में विशेष रूप से श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली सभा) श्री सुरेन्द्र पाल रातावाल जी पूर्व मन्त्री दिल्ली सरकार, श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी पूर्व उपमहापौर, श्री विशेष रवि जी विधायक करोल बाग, श्री हर्ष वर्धन शर्मा पूर्व निगम पार्षद करोल बाग एवं अन्य सामाजिक संगठनों के अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों ने उत्साहपूर्वक यज्ञ एवं समारोह में भाग लिया। कार्यक्रम के संचालक आर्य समाज के प्रधान श्री वागीश ईसर जी ने सभी का धन्यवाद किया तथा संस्कृत शिक्षण एवं आर्थिक रूप से कमजोर बालकों के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण सेवा प्रकल्प के लिए आर्य समाज की गतिविधियों पर प्रकाश डाला शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ समारोह का समापन किया हुआ।

- मन्त्री

आर्यसमाज बड़ा बाजार सोनीपत का 98वाँ वार्षिकोत्त्सव सम्पन्न

प्रात: काल में यज्ञ के उपरान्त उत्सव प्रारम्भ हुआ जिसमें अजमेर से पधारे मूर्धन्य विद्वान डॉ० धर्मवीर जी ने उपनिषद् के माध्यम से ईश्वर के सच्चे स्वरुप की सारगर्भित व्याख्या की। पं० प्रदीप आर्य ने मधुर भजनोंपदेश द्वारा राष्ट्र को उन्नत बनाने का सन्देश दिया। कार्यक्रम में वैदिक प्रश्नोंत्तरी का आयोजन आकर्षण का केन्द्र रहा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वान् स्व० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी द्वारा रचित 'अद्वैतवाद' ग्रन्थ का विमोचन भी हुआ।

अन्त में श्री सुभाष चांदना प्रधान आर्य समाज के द्वारा अभ्यागतो के धन्यवाद एवं विद्वद् अभिनन्दन के पश्चात् शान्तिपाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

- प्रवीण आर्य, मन्त्री

मलयालम वैदिक साहित्य वितरण

आयप्पा मन्दिर कोटा में केरल के कोजीकांड (कालीकट) में आयोजित महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र के आचार्य एम.आर. राजेश द्वारा (मलयालम भाषा) में लिखित साहित्य का महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के तत्त्वावधान में मलयालम भाषीय साहित्य का वितरण किया गया। जो विभिन्न भाषीय प्रवासियों के लिए विशेष लाभकारी एवं जनजागरण का विलक्षण कार्य है।

- प्रभु कुशवाह, मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली हेतु (शीघ्र) विवाहित, योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। आवास की व्यवस्था, दक्षिणा योग्यतानुसार। आवेदन या सम्पर्क करें। *- नरेन्द्र अरोरा, मन्त्री मो. 9312595700*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ईस्ट आफ कैलाश

कैप्टन गौड मार्ग, नई दिल्ली-65

प्रधान- श्री नरेन्द्र नारंग

मन्त्री - श्री सुरेश आर्य

कोषाध्यक्ष- श्री जयदेव राजपाल

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

"विश्व पुस्तक मेले में होंगें वैदिक साहित्य के स्टॉल"

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में 15 फरवरी से 23 फरवरी, 2015 तक आयोजित होने वाले विश्व पुस्तक मेले में दिल्ली प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए 8 स्टाल आरक्षित कराई गई हैं। इनमें एक अंग्रेजी साहित्य तथा शेष 7 स्टाल हिन्दी साहित्य के लिए हैं। सेवाभावी समयदानी कार्यकर्ता एवं वैदिक विद्वान नि:शुल्क सेवा के लिए तत्काल सम्पर्क करें। स्टाल पर पुस्तकों के आलावा वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की कुल सामग्री उपलब्ध होगी। **- विजय आर्य, वैदिक प्रकाशन (9540040339)**

विश्व आयुर्वेद सम्मेलन सम्पन्न

6 नवम्बर से 9 नवम्बर 2014 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के आयुष विभाग द्वारा आयोजित एक विश्व आयुर्वेद सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस समारोह में देश-विदेश के आयुर्वेद व अन्य भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक, विद्वान्, खोज कर्त्ता, विद्यार्थी, समाजसेवी, औषधि निर्माता तथा शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने किया और समापन प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में माननीय स्वास्थ्य मन्त्री डॉ० हर्षवर्धन जी के साथ-साथ आयुष सचिव श्री निलंजन सान्याल का भी बड़ा योगदान रहा है। *- सुरेन्द्र राठौर, सचिव*

आर्य समाज रामनगर नैनीताल का 89वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय द्वार पर स्थित रामनगर जहाँ 1876 में ऋषिवर पधारे थे। आर्य समाज का 89 वाँ वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार कार्यक्रम दिनांक 7 से 9 नवम्बर तक हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रहमा व मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा उ. खण्ड के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार ने सत्यसनातन वैदिक धर्म को यज्ञ का धर्म बताते हुए वेद व यज्ञ दोनों के द्वारा जीवन में उन्नति (सुख) व अत्यधिक उत्कर्ष (शांति) प्राप्त करने के सूत्र सरलता के साथ बताए। उपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या एवं भजनोपदेशक पं0 जयप्रकाश आर्य ने भी ओजस्वी वाणी में भजनोपदेश श्रवण कराए। रामनगर आर्य समाज के प्रधान श्री रामावतार अग्रवाल, मंत्री श्री दिनेश चन्द्र गोयल एवं विद्यालय की प्रधानाचार्य श्री अमृत बिन्दु सहगल आदि ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

- डॉ0 ब्रजमोहन आचार्य, संयोजक

राजकोट में वैदिक राष्ट्र कथा यज्ञ शिविर का आयोजन

27 दिसम्बर से 4 जनवरी 2015 तक लगभग 16000 हजार छात्र, छात्राओं को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास तथा आत्मविश्वास, राष्ट्रभक्ति तथा माता-पिता गुरु भक्त बनाने की सीख के लिए प्रांसला आश्रम (वैदिक गऊशाला) में इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में शिक्षाविद् न्यायमूर्ति, वैदिक विद्वान उपदेशक, योगचर्या, व्यामशिक्षक तथा वैज्ञानिक तथा आर.पी.एफ. एवं बी.एस.एफ द्वारा आपदाओ से निपटने के सूत्र भी सीखने को मिलेगे। तथा अन्य विधायें भी सीखायी जायेगी, इस कार्यक्रम में विशेष आकर्षण भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय पधार रहे है। तथा फिल्म अभिनेता मुकेश खन्ना जी भजन गायक भानु प्रकाश शास्त्री (बरेली) एवं विशेष गणमान्य जन पधार रहे है। भाग लेने के लिए सम्पर्क करें - **स्वामी धर्म बन्धु जी महाराज, संयोजक (09099900000)**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

इन्दौर पुस्तक मेला

स्थान : मध्य भारतीय साहित्य समिति परिषद्, रविन्द्र नाथ टैगोर मार्ग, इन्दौर (म.प्र.)

6 दिसम्बर से 14 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

कटक पुस्तक मेला

स्थान : बलियात्रा ग्राउंड (किल्ला पड़िया) बाराबंकी स्टेडियम के सामने, कटक (उड़ीसा)

18 से 26 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

निवेदक :-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 दिसम्बर से रविवार 7 दिसम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4/5 दिसम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 3 दिसम्बर, 2014

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 6 का शेष

आर्य जी ने किया। उन्होंने कहा कि– भारत की पुरानी तस्वीर, आज की बदली हुई तस्वीर और आने वाले कल के लिए संकल्प और स्वप्न को प्रस्तुत करता यह उत्सव ऐतिहासिक रहा। इस प्रकार के कार्यक्रम से प्रभावित होकर बच्चे निश्चित रूप से देश के निर्माण में अपना योगदान दे पायेगें।

अन्त में महोत्सव कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी संस्थान) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि– आज के इस कार्यक्रम को देखकर यह निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि यह उत्सव एमिटी शिक्षा संस्थान का है या आर्य समाज के अन्तर्गत चलने वाले विद्यालयों का। मैंने आर्य विद्यालयों का ऐसा उत्सव पहले कभी नही देखा। आर्य विद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थियों के अभिभावकों को बधाई देता हूं। आपके बच्चे इन आर्य विद्यालयों में उत्तम संस्कार पा रहे है उनका भविष्य उज्जवल है। स्टेडियम में उपस्थित प्रत्येक जन ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना की। सभी ने संकल्प किया कि "अपने प्राणों से प्रिय भारत की गौरवमयी संस्कृति पर कभी कोई आँच नही आने देगें और मातृभूमि भारत की सम्प्रभुता एवं सम्मान को चोट पहुँचाने वाला कार्य न स्वयं करेगें और न औरों को करने देंगे। अपने उत्तम संस्कार, शुद्ध विचार एवं श्रेष्ठ व्यवहार के द्वारा एक जुट होकर भारत को विश्व का पुनः सिरमौर बनाने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देगें और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संदेश देकर सभी को श्रेष्ठ बनाएगें। कार्यक्रम में सभी विद्यालयों को 'स्मृति चिन्ह' द्वारा सम्मानित किया गया। गत वर्ष अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। ललिता प्रसाद आर्य कन्या सी०सै० स्कूल, अनाज मण्डी, शाहदरा की छात्रा को बारहवीं कक्षा में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध शिक्षा विद् श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा जी व श्रीमती नमिता पालित जी को आर्य विद्या परिषद् की विभिन्न गतिविधियों में सहयोग देने के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' प्रस्तुति द्वारा हुआ। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम– श्रेष्ठ बनो– श्रेष्ठ बनाओ ' का संदेश देते हुए सभी उपस्थित महानुभवों ने शान्ति पाठ किया।

–वीणा आर्या एवं सरोज यादव
संयोजिका

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के आर्य विद्यालयों के बच्चों के कार्यक्रम 'कल आज और कल' का संस्कार चैनल पर 21 नवम्बर को सीधा प्रसारण, आर्य समाज के संस्कारों को जन-जन तक पंहुचाने के लिये निश्चय ही एक प्रशंसनीय कार्य है, जिसके लिये आर्य विद्यालयों के बच्चे, शिक्षक, महाशय धर्मपालजी,ब्र. राजसिंह आर्य, श्री विनय आर्य व सहयोगी बधाई के पात्र हैं ।

– भारत भूषण आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, जम्मू व कश्मीर

कल, आज और कल समारोह की शेष चित्रमय झांकी अगले अंक में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर 30% की विशेष छूट

आंवला कैडी	आंवला कैडी	च्यवनप्राश स्पेशल
(500 ग्राम) ~~160~~/–	(1किलो) ~~294~~/–	(1किलो) ~~286~~/–
110/–रु.	210/–रु.	200/–रु.

इसके अलावा सभी उत्पादों पर 10% की छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।– महामन्त्री

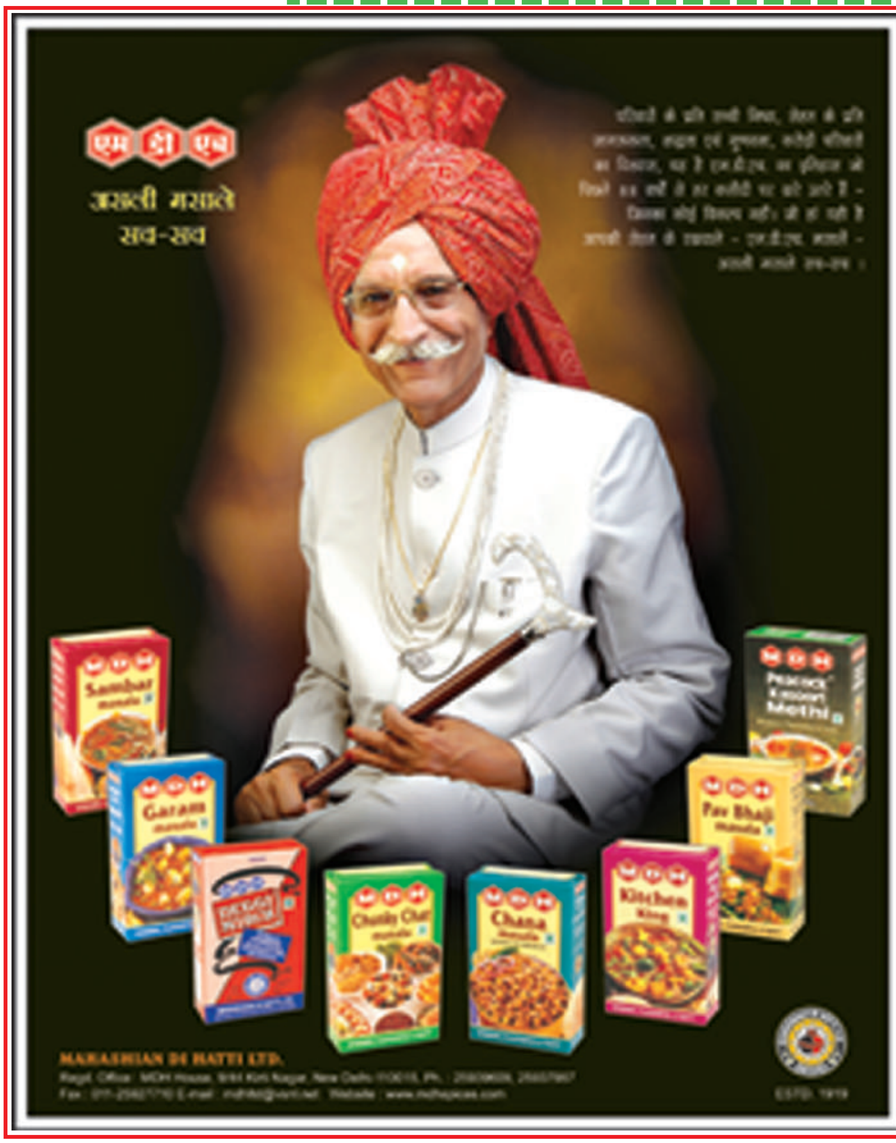

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफेक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह